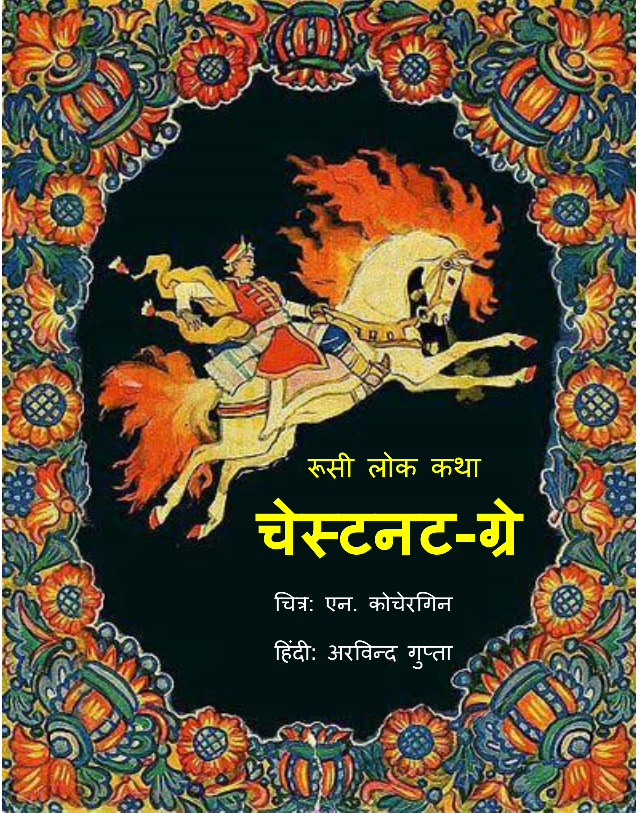


रूसी लोक कथा

चेस्टनट-ग्रे

चित्र: एन. कोचेरगिन

हिंदी: अरविन्द गुप्ता



एक बार की बात है एक बूढ़ा आदमी था. उसके तीन बेटे थे, जिनमें से सबसे छोटे को सब लोग "इवान बेवकूफ" कहते थे.

बूढ़े आदमी ने अपने खेत में गेहूँ बोया था. गेहूँ की फसल ऊँची और खूब अच्छी हुई, लेकिन किसी ने खेत को रौंदना शुरू कर दिया.

तब बूढ़े आदमी ने अपने बेटों से कहा:

"मेरे प्यारे लड़कों! मैं चाहता हूँ कि चोर को पकड़ने के लिए तुम बारी-बारी से रात में गेहूँ के खेत की रखवाली करो."

पहली रात को बड़ा बेटा खेत की रखवाली के लिए निकला, लेकिन उसे नींद आ गई. वह घास के मैदान पर लेट गया और सुबह तक वहीं गहरी नींद में सोता रहा.

जब वह घर आया तो उसने कहा, "मुझे रात को बिल्कुल भी नींद नहीं आई, लेकिन मैंने कोई चोर नहीं देखा."



दूसरी रात मंझला बेटा खेत की रखवाली करने गया और वह भी सुबह तक घास के ढेर में गहरी नींद सोता रहा.

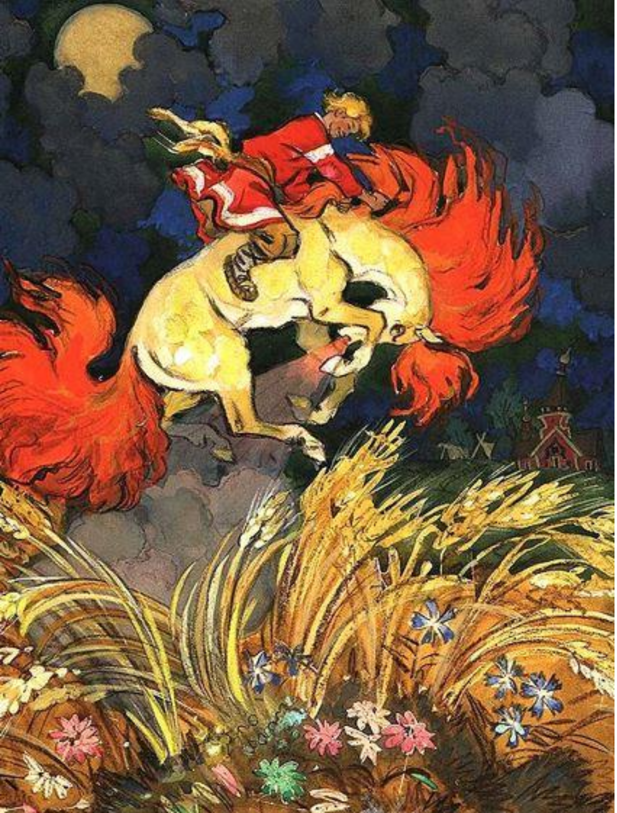
तीसरी रात मैदान की रखवाली करने की बारी इवान बेवकूफ की थी. उसने अपनी जेब में एक डबलरोटी का टुकड़ा रखा, एक रस्सी साथ में ली और निकल पड़ा. जब वह खेत में पहुंचा तो वो एक पत्थर पर बैठ गया. वह वहीं पर बैठकर आँखें खोलकर डबलरोटी का टुकड़ा चबाने लगा और चोर का इंतज़ार करने लगा.

आधी रात के समय एक घोड़ा सरपट दौड़ता हुआ मैदान में आया. उसके आयल चांदी और सोने के थे.

उसके खुरों की थाप से नीचे से धरती हिलने लगी, उसके नथुनों से धुआं निकलने लगा और उसके कानों से आग की लपटें निकलने लगीं.

घोड़े ने गेहूँ की बालियाँ खाना शुरू कर दीं, पर उसने जितनी बालियाँ खाईं उससे कहीं अधिक रौंद डालीं.

इवान दबे पांव घोड़े के पास गया और उसके उसके सिर में रस्सी का फंदा डाल दिया. घोड़े ने खुद को छुड़ाने की बहुत कोशिश की, लेकिन इवान उसकी पीठ पर कूद गया और उसने उसकी अयाल पकड़ ली. घोड़े ने काफी लात मारी! वह मैदान में ऊपर और नीचे तेज़ी से सरपट दौड़ा! लेकिन वह इवान को अपनी पीठ से नहीं हिला सका!



तब घोड़े ने विनती की, "मुझे जाने दो, इवान! जब भी तुम्हें मेरी आवश्यकता होगी मैं तुम्हारी सहायता करने का वादा करता हूँ."

"ठीक है," इवान ने कहा. "मैं तुम्हें जाने दूँगा. लेकिन मैं तुम्हें दोबारा कैसे पाऊँगा?"

"उसके लिए तुम्हें एक खुले मैदान के बीच में आना, फिर अपनी उंगलियों के माध्यम से सीटी बजाना और जितना संभव हो सके जोर से चिल्लाना: 'चेस्टनट-ग्रे, सुनो और पालन करो!' जैसे ही तुम बुलाओगे मैं आ जाऊँगा."

इवान ने घोड़े को जाने दिया, और घोड़े ने वादा किया कि वह फिर कभी गेहूँ नहीं खाएगा न ही उसे रौंदेगा.



अगली सुबह इवान घर लौटा.

"अच्छा, क्या तुमने वहाँ कुछ देखा?" उसके भाइयों ने पूछा.

इवान ने कहा, "मैंने चांदी और सोने की आयल वाला एक घोड़ा पकड़ा."

"और वह कहां है?"

"क्यों, उसने वादा किया कि वह फिर कभी गेहूँ को नहीं रौंदेगा, और इसलिए मैंने उसे छोड़ दिया."

उसके भाइयों को उसकी बात पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं हुआ और वो खूब हँसे.

परन्तु उस रात के बाद फिर किसी ने गेहूँ को नहीं रौंदा.



इसके तुरंत बाद ज़ार ने प्रत्येक शहर, कस्बे और गाँव में निम्नलिखित घोषणा के साथ अपने दूत भेजे:

"रईसों, व्यापारियों और साधारण किसान लोग, आप सभी ज़ार की बेटी, ऐलेना सुंदरी को देखने के लिए इकट्ठा हों! ऐलेना अपनी ऊंची मीनार की खिड़की पर बैठी होगी. जो भी अपने घोड़े पर उसके पास तक कूदकर उसकी उंगली से कीमती अंगूठी ले सकेगा उससे ही राजकुमारी की शादी होगी!"

नियत दिन पर दोनों बड़े भाई ज़ार के महल की यात्रा के लिए तैयार हुए. वे वहाँ अपनी किस्मत आज़माने नहीं जा रहे थे, बल्कि बस दूसरे लोगों को देखने जा रहे थे. इवान बेवकूफ ने उनसे विनती करते हुए कहा:

"भाइयों, कृपा मुझे कोई बूढ़ा घोड़ा दे दो. मैं भी ऐलेना सुंदरी को देखना चाहता हूँ!"

"सुनो मूर्ख!" उन्होंने कहा. "क्या तुम अमीर लोगों को हँसाना चाहते हो? अच्छा होगा अगर तुम यहीं आग के पास बैठो और राख साफ़ करो!"



जब उसके भाई चले गए, तो इवान ने उनकी पत्नियों से कहा:

"मुझे एक टोकरी दे दो, मैं जंगल में मशरूम इकट्ठा करने जाऊंगा."

उसने एक टोकरी ली और जंगल जाने का बहाना बनाते हुए वहां से चल दिया.

जब वह एक खुले मैदान में पहुंचा तो उसने टोकरी एक झाड़ी में फेंक दी, अपनी उंगलियों के माध्यम से सीटी बजाई और अपनी तेज़ आवाज़ में चिल्लाया: "चेस्टनट-ग्रे, सुनो और आज्ञा मानो!"

पृथ्वी हिलने लगी और घोड़ा सरपट दौड़ा हुआ आया. उसके नथनों से धुआं निकल रहा था, और उसके कानों से आग की लपटें निकल रही थीं. वह इवान के सामने आकर रुक गया. "आप क्या चाहते हैं?" घोड़े ने पूछा.

इवान ने उसे अपनी कहानी सुनाई.



"ठीक है, फिर, मेरे दाहिने कान में घुसो और मेरे बाएँ कान से बाहर निकलो," घोड़े ने कहा.

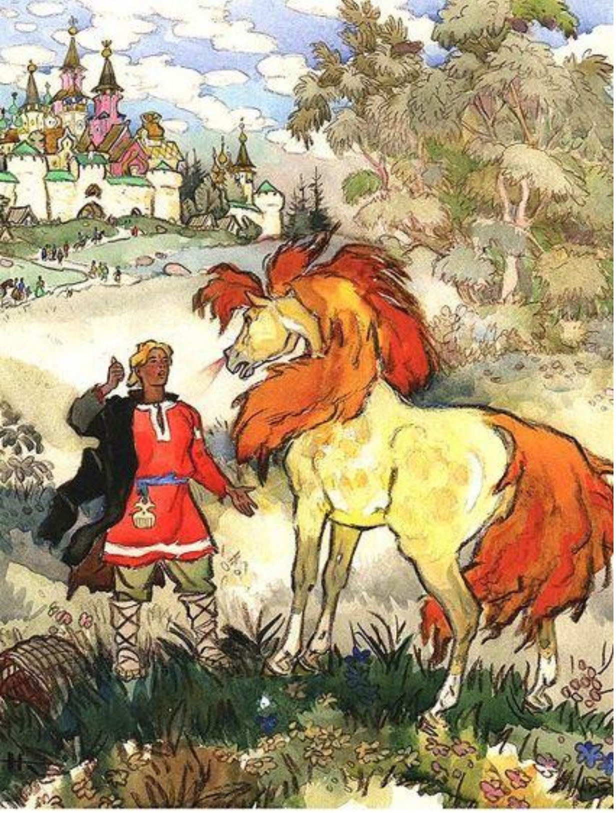
इवान उसके दाहिने कान में घुसा और बाएँ से बाहर रेंगता हुआ जब बाहर निकला तो वो एक राजकुमार में बदल गया था. उस जैसा राजकुमार पहले न कभी किसी ने देखा न ही सुना था.

वह चेस्टनट-ग्रे पर सवार हुआ और वे दोनों शहर की ओर सरपट दौड़ पड़े.

रास्ते में वह अपने भाइयों से आगे निकल गया और उन्हें धूल के बादलों में पीछे छोड़ गया.

इवान ज़ार के महल के सामने चौक में पहुंचा. वहां पर पहले से ही लोगों की काफी भीड़ थी.

अपनी ऊंचे मीनार की खिड़की पर राजकुमारी ऐलेना सुंदरी बैठी थी. उसकी उंगली पर एक सुंदर चमचमाती अंगूठी थी. वह पूरे देश में सबसे सुंदर युवती थी. हर कोई उसे आश्चर्य से देख रहा था, लेकिन किसी ने भी अपनी गर्दन टूटने के डर से उसकी खिड़की तक कूदने की हिम्मत नहीं की.



इवान ने चेस्टनट-ग्रे के किनारों में अपनी एड़ियाँ गड़ा दीं. घोड़ा फुँफकारने लगा, हिनहिनाने लगा और छलाँग लगाने लगा. लेकिन उसका सिर राजकुमारी की खिड़की से तीन गज नीचे रहा.



लोग आश्चर्यचकित थे. फिर इवान ने चेस्टनट-ग्रे को घुमाया और दुबारा सरपट दौड़ पड़ा.

"वह कौन है? वह कौन है?" हर कोई चिल्लाया.



उस समय तक इवान गायब हो चुका था. उन सबने उसे जाते हुए देखा था, परन्तु यह नहीं देखा था कि वह किस ओर गया था.

इवान शहर से बाहर चला गया, खुले मैदान में पहुंचा, अपने घोड़े से उतरा, उसके बाएं कान में रेंगता हुआ उसके दाहिने कान से बाहर निकला और वापस इवान बेवकूफ में बदल गया. फिर उसने चेस्टनट-ग्रे को जाने दिया और घर चला गया. वहाँ वह अपने भाइयों के लौटने की प्रतीक्षा करने के लिए आग के पास बैठ गया.

जब उसके भाई वापस आये तो उन्होंने अपनी पत्नियों को बताया कि उन्होंने शहर में क्या देखा था. "यदि आप केवल यह देखतीं कि ज़ार के पास कितना अच्छा राजकुमार आया था! हमने उसके जैसा युवक पहले कभी नहीं देखा. वह लगभग राजकुमारी की खिड़की तक पहुँच गया था!"

इवान आग के पास बैठा और हँसा. "भाइयो, क्या तुम्हें यकीन है कि तुमने वहाँ जो देखा था वह मैं नहीं था?"

"तुम्हारे जैसा मूर्ख वहां कैसे हो सकता है? तुम जहां हो वहीं बैठे रहो और मक्खियां मारो!"



"अगले दिन दोनों बड़े भाई फिर से शहर के लिए निकले, और इवान अपनी टोकरी लेकर मशरूम इकट्ठा करने चला गया.

जब वह खुले मैदान में आया तो उसने अपनी टोकरी एक झाड़ी में फेंक दी, अपनी उंगलियों से सीटी बजाई और अपनी ऊँची आवाज़ में चिल्लाया: "चेस्टनट-ग्रे, सुनो और आज्ञा मानो!"

पृथ्वी हिल गई और घोड़ा सरपट दौड़ पड़ा. उसके नथनों से धुआं निकल रहा था, और उसके कानों से आग की लपटें निकल रही थीं. वह इवान के सामने अपनी जगह पर रुक गया.

इवान रेंगते हुए घोड़े के दाहिने कान में घुस गया और बायें कान से बाहर निकला और फिर से एक सुन्दर राजकुमार में बदल गया.

वह चेस्टनट-ग्रे पर सवार हुआ और महल की ओर सरपट दौड़ा. वहाँ उसने देखा कि अब चौराहे पर पिछले दिन से भी अधिक भीड़ थी. हर कोई सुंदर राजकुमारी को निहार रहा था, लेकिन अपनी गर्दन टूटने के डर से किसी ने भी उसकी खिड़की तक कूदने की हिम्मत नहीं की.

इवान ने चेस्टनट-ग्रे में अपनी एड़ियाँ गड़ा दीं. घोड़ा फुँफकारने लगा और छलाँग लगाने लगा. लेकिन उसका सिर अभी भी राजकुमारी की खिड़की से दो गज नीचे था.

इवान ने चेस्टनट-ग्रे को घुमाया और सरपट दौड़ पड़ा. सब लोगों ने उसे चढ़ते हुए देखा था, परन्तु यह किसी नहीं देखा था कि वह किस ओर गया था.

वह चेस्टनट-ग्रे पर सवार होकर दुबारा महल की ओर सरपट दौड़ पड़ा.



इस बार जब उसके घोड़े ने ऊंची मीनार पर छलांग लगाई तो उसने अपने घोड़े को कोड़ा मारा. चेस्टनट-ग्रे पहले से भी अधिक जोर से हिनहिनाने लगा. उसने अपने खुरों से ज़मीन पर प्रहार किया और छलाँग लगाई - और वह खिड़की तक पहुँच गया!

इवान ने राजकुमारी के गुलाबी होठों को चूमा और उसकी उंगली से कीमती अंगूठी ले ली. फिर उसने अपना घोड़ा घुमाया और सरपट दौड़ पड़ा.

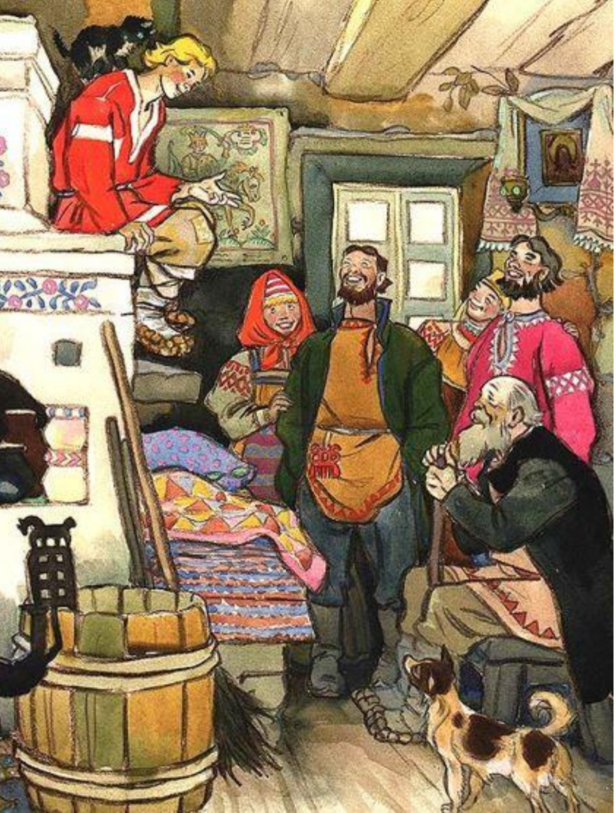
लोग चिल्लाये: "उसे पकड़ो! उसे पकड़ो!"

लेकिन इवान गायब हो गया था. लोगों को उसका कोई अता-पता नहीं चल सका!

इवान ने चेस्टनट-ग्रे को छोड़ दिया और घर चला गया. उसके एक हाथ पर थोड़ा-सा कपड़ा लिपटा हुआ था.

"तुम्हारे हाथ में क्या हुआ?" उसके भाइयों की पत्नियों ने उससे पूछा.

"मैं मशरूम ढूंढ रहा था और तब एक नुकीली टहनी चुभा गई," उसने जवाब दिया और अपने पलंग पर लेट गया.



जल्द ही उसके भाई घर आ गए. उन्होंने अपनी पत्नियों को बताया कि उन्होंने शहर में क्या-क्या देखा था. "इस बार वह कुलीन युवक राजकुमारी की खिड़की तक पहुंच गया. उसने उसे चूमा और उसकी उंगली से अंगूठी ले ली!"

इवान ने चिमनी के पीछे से उन्हें बुलाया:

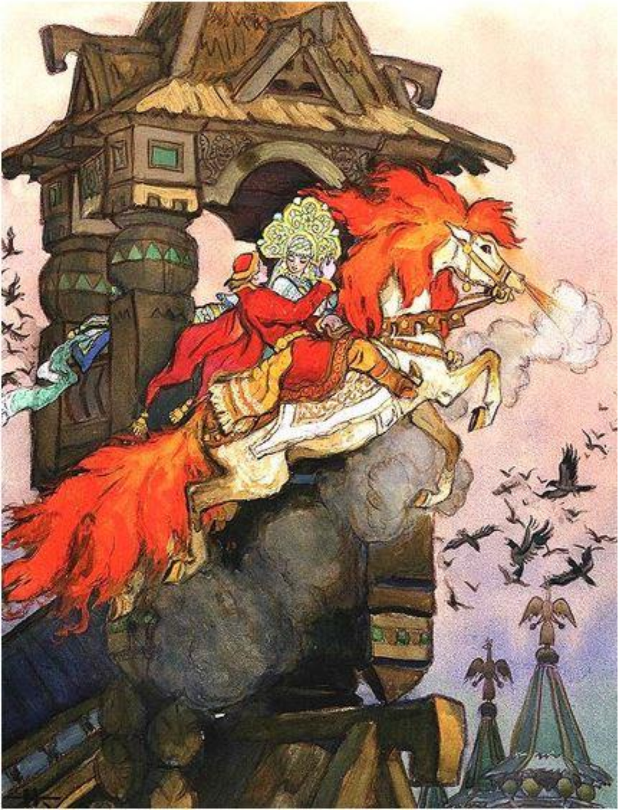
"भाइयो, क्या तुम्हें यकीन है कि आपने वहाँ जो देखा था वह मैं नहीं था?"

"शांत रहो, मूर्ख, और हस्तक्षेप मत करो!"

इवान ने राजकुमारी की अंगूठी देखने का फैसला किया. उसने हाथ पर बंधा कपड़ा खोल दिया. अंगूठी में जड़ा पत्थर चमक उठा और उससे पूरा घर जगमगा उठा.

"आग से खेलना बंद करो, मूर्ख!" उसके भाई चिल्लाए. "तुम घर जला दोगे. अब समय आ गया है तुम्हें पूरी तरह से घर से बाहर निकालने का!"

इवान ने कुछ नहीं कहा. इसके बजाय, उसने फिर से अपने हाथ पर कपड़ा लपेट लिया.



तीन दिन बीत गए. एक बार फिर ज़ार ने अपने दूत को ग्रामीण इलाकों में भेजा ताकि उसकी प्रजा के सभी लोग एक भव्य दावत में आएं और यह सुनिश्चित करें कि कोई भी व्यक्ति घर पर न रहे. यदि किसी ने अवज्ञा करने का साहस किया, तो ज़ार उसका सिर कटवा देगा!

भाई कुछ नहीं कर सकते थे. उन्हें इवान बेवकूफ को दावत में अपने साथ ले जाना पड़ा.

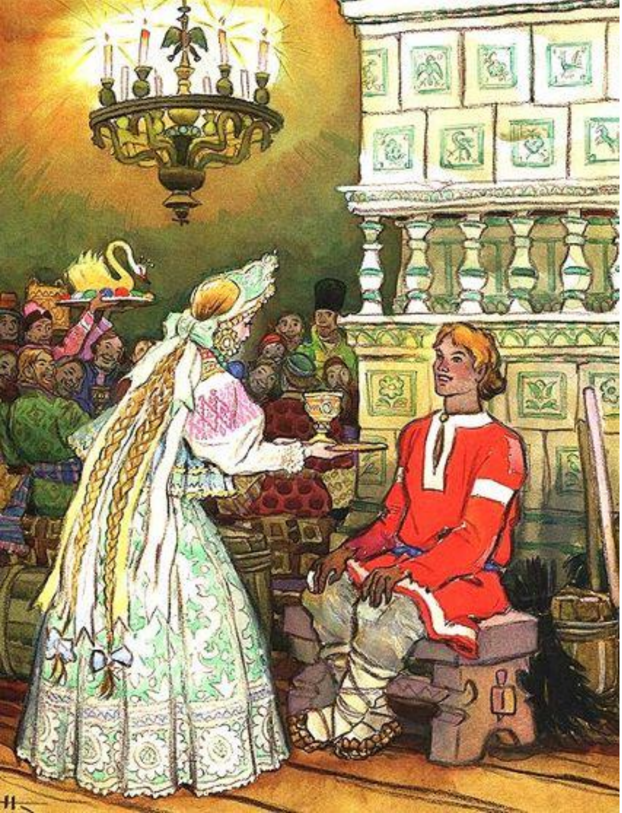
जब वे पहुंचे तो वे कढ़ाई वाले कपड़ों से ढकी हुई ओक की मेजों पर उन्हें बैठाया गया. उन्होंने खाया-पिया और बातें कीं. लेकिन इवान को चूल्हे के पीछे एक कोने में बैठने की जगह मिली.

ऐलेना सुंदरी ने अपने मेहमानों को बारी-बारी से वाइन और भोजन की पेशकश की. और हर बार वह यह देखने के लिए रुकती थी कि क्या कोई उसकी क़ीमती अंगूठी पहने हुए था, क्योंकि जो उस अंगूठी को पहने था वही उसका पति होगा.

ऐलेना को कहीं भी अंगूठी दिखाई नहीं दी.

अपने सभी मेहमानों से मिलने के बाद वह इवान के पास गई.

वहाँ वह अपने फटे कपड़ों में चूल्हे के पीछे बैठा था. उसके हाथ पर एक कपड़ा लिपटा हुआ था.



भाइयों ने उसकी ओर देखा और सोचा: "हम्फ! राजकुमारी हमारे मूर्ख इवान को भी शराब देने जा रही है.

राजकुमारी ने इवान को शराब का गिलास दिया और पूछा:

"तुम्हारे हाथ पर पट्टी क्यों बंधी है?"

"मैं जंगल में मशरूम चुन रहा था और फिर एक टहनी मेरे हाथ में चुभ गई," उसने उत्तर दिया.

"कपड़ा उतारो और मुझे अपना हाथ दिखाओ."

इवान ने वैसा ही किया जैसा उससे कहा गया था. वहाँ उसकी उंगली पर राजकुमारी की क़ीमती अंगूठी थी! वो अंगूठी बहुत तेज़ चमक रही थी!









राजकुमारी बहुत खुश हुई. वह इवान का हाथ पकड़कर उसे राजा के पास ले गई.

"यह मेरे पति है, पिताजी," उसने कहा.

इवान ने अपने कपड़े बदले. वह अब इवान बेवकूफ नहीं था, बल्कि एक सुन्दर राजकुमार था.



फिर इवान और राजकुमारी एलीना ने तुरंत विवाह किया और मेहमानों को एक भव्य दावत दी.

मैं भी वहां था. मैंने भी शराब पी और जमकर खाना खाया.